युवाओं में रोजगारपरक कौशल विकसित कर उनके आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में वैश्विक शोध नीतियों की भूमिका

1. **डॉ. युलेन्द्र कुमार राजपूत, प्राचार्य एवं शोध-निर्देशक, अग्रसेन महाविद्यालय, पुरानी बस्ती, रायपुर छ.ग.**
2. **एकता ठाकुर, शोधार्थी, अग्रसेन महाविद्यालय, पुरानी बस्ती, रायपुर छ.ग.,**
ईमेलआईडी– ektathakur39@gmail.com

शोध सार

वर्तमान वैश्विक युग में रोजगार प्राप्ति हेतु केवल पारंपरिक शिक्षा ही पर्याप्त नहीं है, अपितु आर्थिक प्रगति के लिए शिक्षा के साथ कौशल का होना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि तीव्र तकनीकी विकास ने रोजगार प्राप्ति को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। उद्योगों एवं व्यावसायिक नियोक्ताओं को अब ऐसे कर्मचारियों की आवश्यकता रहती है जो काम करने में तकनीकी एवं व्यावहारिक रूप से कुशल हों, इसलिए वैश्विक शोध नीतियों में डिजिटल साक्षरता, उद्यमिता विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसे रोजगारपरक कौशल को शामिल किया जा रहा है ताकि युवाओं में संचार कौशल, नेतृत्व क्षमता, समस्या समाधान, आत्मनिर्भरता जैसे गुण विकसित हो सकें। इस शोध पत्र के माध्यम से वैश्विक शोध नीतियों तथा भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं कौशल विकास को बढ़ावा देने वाली योजनाओं के प्रयासों का अध्ययन किया गया है। जिससे ज्ञात हुआ कि वैश्विक शोध नीतियां नवाचार, डिजिटल परिवर्तन, सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति तथा कौशल विकास पर जोर दे रही हैं, ताकि शोध कार्यों को पारदर्शिता के साथ हर वर्ग के लोगों के लिए सुलभ बनाया जा सके तथा शिक्षा संस्थानों में उद्योगों की मांग अनुरूप कौशल शिक्षा प्रदान कर रोजगार प्राप्ति एवं आर्थिक विकास में योगदान दिया जा सके।

मुख्य बिन्दु – वैश्विक शोध नीतियां, कौशल विकास, आर्थिक विकास, रोजगारपरक कौशल, युवाओं का आर्थिक विकास।

प्रस्तावना

हमारे देश में परम्परागत शिक्षा के माध्यम से गुरु-शिष्य परम्परा को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाया गया, जिसमें लोक-कला, संगीत, नृत्य, भाषा, साहित्य आदि का ज्ञान केवल गुरु के द्वारा शिष्य को दिया जाता था, यह ज्ञान पुस्तकीय, यांत्रिकएवं रूढ़ीवादिता पर केन्द्रित था, जिसके कारण छात्रों की व्यक्तिगत रुचि पर ध्यान न देकर उन्हें विद्यालय में सिखाए जा रहे ज्ञान को ही कंठस्थ करने को कहा जाता था । किन्तु समय के साथ नये-नये शैक्षिक प्रयोग किए गए जिससे आधुनिक शिक्षा अस्तित्व में आई । जिसमें छात्रों को न केवल शैक्षणिक ज्ञान दिया जा रहा अपितु उन्हें रोजगार प्राप्ति हेतु कुशल एवं आत्मनिर्भर भी बनाया जा रहा है । वैश्वीकरण के युग में, किसी भी देश के आर्थिक विकास में कौशल प्रशिक्षण का बहुत महत्व है, यह बढ़ती कार्यक्षमता एवं उत्पादकता हेतु अनिवार्य बन गया है । भारत में कुशल श्रमशक्ति की कमी को दूर करने के लिए विभिन्न कौशल प्रशिक्षण योजनाओं का संचालन किया जा रहा है, साथ ही वैश्विक शोध नीतियों के माध्यम से युवाओं के कौशल विकास हेतु सतत प्रयास किए जा रहे है ।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य निम्नलिखित है

1. युवाओं के आर्थिक विकास हेतु आवश्यक रोजगारपरक कौशल का अध्ययन करना ।
2. कौशल विकास को बढ़ावा देने वाले नीतियों एवं योजनाओं का अध्ययन करना ।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग कर तालिका के माध्यम से युवाओं के कौशल प्रशिक्षण की स्थिति का वर्णन करते हुए व्याख्या तथा भारत में वैश्विक शोध नीतियोंकी भूमिका का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष का निर्माण किया गया है ।

- **रोजगारपरक कौशल** –ऐसे रोजगारपरक कौशल जो युवाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में सहायक हो सकते है :-

1. **संचार कौशल**– किसी व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुनना, उसे समझ कर सहानुभूति एवं प्रभावी ढंग से अपने विचारों को स्पष्टता से प्रस्तुत करना, यह संचार कौशल के अंतर्गत आता है । इसमें वक्ता का अपनी भाषा में पकड़ अच्छा होना चाहिए और आवश्यकतानुसार अन्य भाषाओं का ज्ञान होना वार्तालाप को सरल बना सकता है ।
2. **टीमवर्क कौशल**– टीम के प्रत्येक सदस्यों की शक्तियों और सीमाओं का पहचान कर अपनी क्षमता एवं योग्यता के साथ टीम के कार्यों में सहयोग करना, मार्गदर्शन देना, उद्देश्य पूर्ति हेतु एक-दूसरे को प्रेरित करते हुए प्रभावी ढंग से कार्य करना, टीम वर्क कौशल कहलाता है ।
3. **समस्या-समाधान करने का कौशल**– यदि कार्य करते समय कोई समस्या आती है तो तथ्यों का विश्लेषण करते हुए उनका समाधान करने में पहल दिखाना, समस्या को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना तथा व्यावहारिक समाधान के लिये रणनीतियां बनाना, उन्हें लागू कर निगरानी करना ताकि भविष्य में समस्या का दोहराव न हो, यह समस्या समाधान कौशल के अंतर्गत आता है ।
4. **पहल करने का कौशल**– हितधारकों और प्रायोजकों के साथ संपर्क करना, उन अवसरों की पहचान करना जो रोजगार प्राप्ति में सहायक हो, रचनात्मक एवं नए विचार प्रस्तुत कर उन्हें क्रिया में बदलना अर्थात् विचारों को व्यवहार में बदलना, ये सभीपहल कौशल कहलाता है ।
5. **प्रबंधन कौशल**– प्रबंधन कौशल के अंतर्गत समय एवं प्राथमिकताओं का प्रबंधन, कार्यों का प्रबंधन, लोगों का प्रबंधन, वित्त का प्रबंधन, जोखिम का प्रबंधन आदि शामिल हैं । जिसमें लक्ष्य के अनुसार लोगों को प्रशिक्षण देना, प्रेरित करना, उनका पर्यवेक्षण करना, कार्य के संचालन हेतु पर्याप्त वित्त एवं साधन कीव्यवस्था करना आदि शामिल है ।
6. **प्रौद्योगिकी कौशल**– नई सूचना प्रौद्योगिकियोंको सीखने के लिए तत्पर रहना, डेटा को विभिन्न प्रौद्योगिकियों के माध्यम से उपयोग करना तथा सुरक्षा को बनाये रखना,प्रौद्योगिकी कौशल कहलाता है ।
7. स्व-प्रबंधन कौशल –अपने स्वयं के कार्यों का मूल्यांकन करते हुए उनमें आवश्यकतानुसार सुधार करना, नैतिक रूप से काम करना तथा जिम्मेदारी लेना, स्व-प्रबंधन कौशल कहलाता है ।

भारत में वैश्विक शोध नीतियों की भूमिका

विश्व के युवा देशों में भारत भी शामिल हैं, इसलिए वैश्विक संस्थाओं के शोध नीतियों से प्रेरणा लेते हुए भारत में कई कौशल विकास योजनाएँ एवं नीतियां संचालित है जिससे कौशल प्रशिक्षण द्वारा युवाओं का आर्थिक विकास हो सके।

1. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**– इस नीति के तहत हर विद्यार्थी के क्षमताओं को स्वीकार करते हुए उन्हें बुनियादी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करना, विद्यार्थी के रुचि अनुसार उन्हें पाठ्यक्रम चुनने की स्वतंत्रता देना, व्यावसायिक शिक्षा देना ताकि वे रोजगार प्राप्त करने में सक्षम हो सके, जीवन कौशल, नैतिकता एवं मानवीय मूल्य स्थापित करना, रचनात्मक एवं तार्किक सोच विकसित करना, जीवन पर्यंत सीखते रहना शामिल है ।
2. **स्किल इंडिया मिशन**- भारत में युवाओं को व्यवहारिक एवं तकनीकी कौशल के माध्यम से रोजगार प्राप्त करने में सक्षम बनाने हेतु 15जुलाई 2015स्किल इंडिया मिशन की शुरुआत की गई । इस मिशन के तहत युवाओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, ग्रीन एनर्जी जैसी तकनीकों का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है ताकि वे भविष्य में इन क्षेत्रों में भी रोजगार प्राप्त कर सके ।

3. **प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना**– इस योजना के तहत भारतीय युवाओं को आजीविका प्राप्त करने के उद्देश्यउद्योग की मांग के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिसमें प्रशिक्षण उपरांत उन्हें प्रमाणपत्र और मौद्रिक सहायता याप्लेसमेंट प्रदान किया जाता है ।

❖ **व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवाओं की स्थिति**

Source- https://www.dataforindia.com/charts/ba049d98463d470c9f6f6eaabacff29b

Year	Formal training	Informal training	No training
2005	3.68%	7.75%	88.57%
2012	3.02%	8.60%	88.38%
2018	1.98%	6.13%	91.89%
2019	2.39%	8.91%	88.70%
2020	3.21%	10.70%	86.09%
2021	3.28%	13.61%	83.11%
2022	3.39%	16.07%	80.54%
2023	3.79%	23.61%	72.59%

उपर्युक्त आंकड़ों से यह ज्ञात हुआ कि औपचारिक प्रशिक्षण लेने वाले युवाओं की संख्या अनौपचारिक प्रशिक्षण लेने वाले और प्रशिक्षण नहीं लेने वालों की संख्या से बहुत कम है । किंतु 2005से 2023तक अनौपचारिकप्रशिक्षण लेने वालों की स्थिति में लगातार वृद्धि हुई है, जो कि सकारात्मक परिणाम दर्शाता है। वहीं प्रशिक्षण नहीं लेने वाले युवाओं के प्रतिशत मेंकमी हुई है किन्तु प्रशिक्षण लेने वालों की तुलना में उनका प्रतिशत बहुत अधिक है ।

निष्कर्ष

शोध से ज्ञात हुआ कि भारत में कौशल प्रशिक्षण नीतियों एवं योजनाओं के माध्यम से युवाओं को रोजगार प्राप्त करने हेतु समर्थ बनाने का प्रयास किया जा रहा है । वैश्विक स्तर पर बनाए जाने वाले नीतियों के प्रभाव से भारत में नई-नई योजनाओं का विकास हुआ है किन्तु जागरूकता की कमी के कारण बहुत से युवा कौशल प्रशिक्षण योजनाओं का लाभ नहीं उठा पा रहे है ।

संदर्भ सूची

1. एनटीए यूजीसी नेट।सेट।जेआरएफ ,शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता 4 (2021)eISBN:978-93-544-9111-5
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
3. भारत सरकार कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय
4. Suresh, Nileena, Data for India: https://www.dataforindia.com
5. TheUniversity of Sydney https://share.google/HZycoOig68UiMqWnR